MIL-I 19/09/20

संधि

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कालेज, हाजीपुर

शेषांश :—

* शब्द निर्माण में वर्णों का यह मेल कई प्रकार का होता है, इसलिए संधि के भिन्न-भिन्न रूप होते हैं। हिन्दी व्याकरण में संधि के मुख्यतः तीन भेद हैं :—

1.) स्वर संधि
2.) व्यंजन संधि
3.) विसर्ग संधि

(1.) स्वर संधि

* स्वर के साथ स्वर के मेल की प्रक्रिया को स्वर संधि कहते हैं। जैसे –

रमा + ईश = रमेश।

यहाँ 'आ' और 'ई' दोनों ही स्वर हैं जो आपस में मिलकर 'ए' का रूप ले चुके हैं।

स्वर संधि के पाँच उपभेद हैं –

(i) दीर्घ स्वर संधि
(ii) गुण स्वर संधि
(iii) वृद्धि स्वर संधि
(iv) यण् स्वर संधि
(v) अयादि स्वर संधि

(i) दीर्घ स्वर संधि → जब दो सजातीय ह्रस्व या दीर्घ स्वर आपस में मिलकर दीर्घ हो जाते हैं, तो उसे दीर्घ स्वर संधि कहते हैं।

जैसे –

अ + अ = आ – उप + अर्जन = उपार्जन ।

अ + आ = आ – पुस्तक + आलय = पुस्तकालय ।

आ + आ = आ – विद्या + आलय = विद्यालय ।

आ + अ = आ – विद्या + अर्थी = विद्यार्थी ।

इ + इ = ई – रवि + इन्द्र = रवीन्द्र ।

इ + ई = ई – गिरि + ईश = गिरीश ।

ई + ई = ई – नदी + ईश = नदीश ।

ई + इ = ई – मही + इन्द्र = महीन्द्र ।

उ + उ = ऊ – गुरु + उपदेश = गुरूपदेश ।

उ + ऊ = ऊ – लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ।

ऊ + ऊ = ऊ – भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व ।

ऊ + उ = ऊ – वधू + उत्सव = वधूत्सव ।

ऋ + ऋ = ॠ – पितृ + ऋण = पितॄण ।

(ii) गुण स्वर संधि → यदि अ/आ के बाद इ/ई, उ/ऊ या ऋ/ॠ आये तो दोनों वर्ण मिलकर क्रमशः ए, ओ और अर हो जाते हैं, जिसे गुण संधि कहते हैं।
जैसे –

अ + इ = ए – देव + इन्द्र = देवेन्द्र ।
अ + ई = ए – गण + ईश = गणेश ।
आ + इ = ए – महा + इन्द्र = महेन्द्र ।
आ + ई = ए – महा + ईश = महेश ।
अ + उ = ओ – सूर्य + उदय = सूर्योदय ।
अ + ऊ = ओ – नव + ऊढा = नवोढा ।
आ + उ = ओ – महा + उत्सव = महोत्सव ।
आ + ऊ = ओ – महा + ऊरु = महोरु ।
अ + ऋ = अर् – सप्त + ऋषि = सप्तर्षि ।
आ + ऋ = अर् – महा + ऋषि = महर्षि ।

— क्रमशः